शिक्षा और संस्कृति के संदर्भ में उत्पन्न होने वाले बदलाव एवं चुनौतियाँ

डॉ. आशु सिन्हा, सहायक आचार्य, लोक प्रशासन, कनोडिया महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

"वसुधैव कुटुम्बकम", भारतीय संस्कृति का मूल विचार है तथा हमारी पहचान है इसकी राह पर ही भारत देश को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त है हमारी संस्कृति ही हमारी धरोहर है जिससे हमे यह स्थान प्राप्त हुआ है । आज के बदलते दौर में जहाँ सब कुछ डिजिटल हो गया है वहाँ शिक्षा व संस्कृति पर भी इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, शिक्षा के वैश्वीकरण और डिजिटलिकरण ने शिक्षा की पहुँच को सुगम बनाया है वहीं इसने कृत्रिम बुद्धिमत्ता को बढ़ावा दिया है । आर्टिफ़िश्यल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकों ने वैश्विक बाज़ार का रुख़ अनायास ही बदल दिया है और यह तेजी से हमारे दैनिक जीवन की गतिविधियों को प्रभावित करता जा रहा है जिसका हमे ज्ञान भी नहीं है और यह हमारी हर जानकारी को अपने पास सँजो रहा है ... अब कुछ भी व्यक्तिगत नहीं रहा । यदि शिक्षण की बात की जाये तो इसकी सुगमता ने विद्यार्थी वर्ग के अपने सोचने समझने की क्षमता को कुछ हद तक खत्म कर दिया है प्राकृतिक बुद्धिमत्ता रचनात्मकता ,कुशलता व तार्किकता का स्थान कृत्रिम बुद्धिमत्ता ,रचनात्मकता ने ले लिया है ..आज हर छोटी से छोटी बात का ज्ञान ऑनलाइन लिया जा सकता है जिसके फलीभूत शिक्षकों का महत्व कम होता जा रहा है.. ने आज इतनी तकनीकें विकसित कर दी हैं इतने नवाचार प्रदान किए हैं की इसके उपयोग से एक दिन यह मानव जाती पर राज करेगा। हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है इसको वैश्विक पटल पर बचाए रखना हर नागरिक की ज़िम्मेदारी है ।

शिक्षा जैसे व्यापक क्षेत्र में जहाँ व्यावसायिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है जिससे बेरोजगारी का प्रतिशत घट सके और हर व्यक्ति न्यूनतम आय कमा कर जीवन यापन कर सके । इसके प्रयोग से किसी भी कार्य को तुरंत सीख लिया जा सकता है जिसके कारण सीखने की क्षमता पर भी इसका असर पड़ता है..

शिक्षण अधिगम एक सतत प्रयास है जो आप के अंदर कौशल की वृद्धि करता है । किसी भी कार्य को सीखने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता है और इस कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने विद्यार्थियों से यह छीन लिया है सब कुछ त्वरित प्राप्त करने की होड़ में नैतिकता का भी पतन होता जा रहा है ।

इस शोध पत्र के माध्यम से यह जाने का प्रयास किया गया है की जैसे शक्तिशाली उपकरण से शिक्षा प्रणाली और संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ेगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटलिकरण से की भूमिका को कैसे परिभाषित किया जा सकता है तथा इसके अत्यधिक उपयोग से क्या नकारात्मक और क्या सकारात्मक परिणाम उत्पन्न होंगे उचित परिणामों की प्राप्ति हेतु कुछ बिन्दुओं का विश्लेषण करना अति आवश्यक है होगा कि एआई वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विभिन्न शिक्षण वातावरणों और शैक्षिक स्तरों में सीखने के अनुभवों को कैसे परिमार्जित करता है।